अध्याय - पंचम

शोध सारांश निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्याय पंचम
शोध सारांश : निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 भूमिका

किसी भी समाज के विकास की प्रक्रिया में शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत एक विकासशील देश है। समाज एवं राष्ट्र की उन्नति के लिए निम्न से निम्न स्तर तक शिक्षा का प्रसार होना आवश्यक है। इस दिशा में शासन द्वारा कई प्रसास किए जा रहे है, मात्र फिर भी समाज में एक बहुत बड़ा वर्ग ऐसा है जिसमें असंख्य बालक–बालिका अर्थाभाव के कारण पढ़ाई नहीं कर पाते उल्टे अपने परिवार के निर्वाह हेतु उन्हें श्रम करना पड़ता है। जिससे आगे चलकर वह शिक्षा से वंचित हो जाते है। तो वही दूसरी और सामान्य परिवार के बच्चे जिन्हें शैक्षिक सुविधाएँ प्राप्त हो जाती है ऐसे बालक या बालिका शिक्षा लेकर अच्छे पद ग्रहण करते है। इस कारण उनकी मानसिक योग्यता भी ज्यादा होती है।

वर्तमान में शिक्षा के माध्यम से बालक–बालिकाओं में स्वावलंबन का भाव पैदा करना आवश्यक है। आज की शिक्षा व्यवस्था में ऐसे बदलाव आवश्यक है कि शिक्षा विद्यार्थियों को स्वावलंबी बनाए। निर्धन वर्ग के विद्यार्थियों का घरेलू वातावरण साहित्यिक शिक्षा के अनुकूल नहीं है ऐसे में यदि उन्हें किसी व्यवसाय के माध्यम से ज्ञानार्जन की बात कहीं जाए तो यह वर्ग शिक्षा से जुड़ने का प्रयास करेगा।

इस शोध से हमें जिन विद्यार्थियों में व्यवसाय की योग्यता पायी जाएगी उन विद्यार्थियों के माता–पिता और शिक्षक से मिलकर हम उनकी परिस्थिति के अनुसार उन्हें शैक्षिक व्यावसायिक प्रावधानों का प्रस्ताव कर सकते है। ताकि भविष्य में बच्चें रोजगार या आजीविका की तैयारी अच्छी ढंग से कर सके।

5.2 समस्या का कथन

“स्वावलंबी शिक्षा योजना के विद्यार्थियों एवं अन्य विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता एवं व्यावसायिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन”

5.3 शोध कार्य के उद्देश्य

1. स्वावलंबी शिक्षा योजना की वर्तमान उपादेयता का अध्ययन करना।
2. स्वावलंबी शिक्षा योजना के विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता का अध्ययन करना।
3. अन्य विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता का अध्ययन करना।
4. स्वावलंबी शिक्षा योजना के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि का अध्ययन करना।
5. अन्य विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि का अध्ययन करना।
6. स्वावलंबी शिक्षा योजना के विद्यार्थियों एवं अन्य विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
7. स्वावलंबी शिक्षा योजना के विद्यार्थियों एवं अन्य विद्यार्थियों की व्यावासयिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

5.4 परिकल्पनाएँ :-

1. स्वावलंबी शिक्षा योजना के बालक एवं अन्य बालकों की मानसिक योग्यता में सार्थक अंतर नहीं है।
2. स्वावलंबी शिक्षा योजना की बालिकाओं एवं अन्य बालिकाओं की मानसिक योग्यता में सार्थक अंतर नहीं है।
3. स्वावलंबी शिक्षा योजना के बालक एवं अन्य बालकों की व्यावसायिक रूचि में सार्थक अंतर नहीं है।
4. स्वावलंबी शिक्षा योजना की बालिका एवं अन्य बालिकाओं की व्यावसायिक रूचि में सार्थक अंतर नहीं है।

5.5 चर

शोध समस्या में निम्न चर है।

1. व्यावसायिक रूचि
2. मानसिक योग्यता

5.6 न्यादर्श का चयन

प्रस्तुत अध्ययन में महाराष्ट्र राज्य के सातारा जिले के 2 जूनियर कॉलेज लिए गए है। न्यादर्श को उद्देश्यपूर्ण प्रकार से चयनित किया गया है।

शोधकार्य में कक्षा 11वीं में अध्ययनरत 160 विद्यार्थियों का समावेश किया गया है। जिनमें 80 स्वावलंबी शिक्षा योजना के विद्यार्थी तथा 80 अन्य विद्यार्थी शामिल किए गए है।

प्रस्तुत अध्ययन के लिए निम्नांकित जूनियर कॉलेज का चयन किया गया था।

1. छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा
2. कर्मवीर भाऊराव पाटील जूनियर कॉलेज ऑफ साईंस

5.7 उपकरण

प्रस्तुत शोधकार्य के लिए निम्नांकित उपकरणों का प्रयोग किया गया।

1. डॉ. एस.पी. कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित व्यावसायिक रूचि प्रपत्र।
2. डॉ. पी श्रीनिवासन द्वारा निर्मित शाब्दिक बुद्धि परीक्षण।

5.8 प्रयुक्त प्रविधि

शोध समस्या से संबंधित प्रदत्तों की सारणियाँ बनाई गई है।

5.9 प्रदत्तों के विश्लेषण में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्राप्त आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए मध्यमान एवं प्रमाण विचलन निकाला गया। प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण के माध्यम से तथ्यात्मक निष्कर्ष निकालने के लिए प्रमुख रूप से 'टी' परीक्षण सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

5.10 शोध परिणाम

1. स्वावलंबी शिक्षा योजना के बालक एवं अन्य बालकों की मानसिक योग्यता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
2. स्वावलंबी शिक्षा योजना की बालिका एवं अन्य बालिकाओं की मानसिक योग्यता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
3. स्वावलंबी शिक्षा योजना के बालक एवं अन्य बालकों की व्यावसायिक रूचि में सार्थक अंतर पाया गया।

4. स्वावलंबी शिक्षा योजना के बालिकाओं एवं अन्य बालिकाओं में व्यावसायिक रूचि में सार्थक अंतर पाया गया।

5.11 निष्कर्ष

आज भारत में प्राथमिक स्तर पर सर्व समावेश शिक्षा का नारा लगाया जा रहा है। सभी को शिक्षा का समान अधिकार का बोल बाला हो रहा है मात्र वास्तव में आज भी न जाने ऐसे कितने बालक-बालिका है जो अर्थाभाव के कारण अपनी पढ़ाई माध्यमिक तक आते-आते तथा उच्च माध्यमिक कक्षा तक (ग्यारहवीं तक) पहुँचते-पहुँचते छोड़ देते है। ऐसी स्थिति में इन बालक-बालिकाओं को एक वरदान सिद्ध होती है यह स्वावलंबी शिक्षा योजना।

स्वावलंबी शिक्षा योजना के बालक-बालिका और अन्य बालक-बालिका की मानसिक योग्यता का मापन करने से जो परिणाम मिले इससे यह निष्कर्ष निकला कि स्वावलंबी शिक्षा योजना के बालक-बालिकाओं को पढ़ाई के साथ-साथ काम भी करना पड़ता है। इस कारण वह अपने श्रम के महत्व को भलिभाँति समझते है। अपनी परिवार की आर्थिक स्थिति को मद्देनजर रखते हुए वे अपनी पढ़ाई की ओर अधिक ध्यान देते है। इसलिये अन्य विद्यार्थियों की भाँति स्वावलंबी शिक्षा योजना के विद्यार्थियों की मानसिक योगयता प्रगल्भ दिखाई देती है। अन्य बच्चे मन लगाकर पढ़ाई करते है, उनके अभिभावक उनकी ओर अच्छा ध्यान देते है मात्र स्वावलंबी शिक्षा योजना के विद्यार्थियों का पारिवारिक माहौल इस प्रकार का नहीं होता। उनके माता-पिता अशिक्षित होते है और उपजीविका के लिए दिनभर श्रम करते है इन सब परिस्थिति की वजह से इन बच्चों में अंतः प्रेरणा निर्माण होकर अपने मन से पढ़ाई की ओर लक्ष्य केंद्रित करते है जिससे उन्हें यथायोग्य सफलता मिलती है।

व्यावसायिक रूची का मापन करने से यह निष्कर्ष मिला कि स्वावलंबी शिक्षा योजना के विद्यार्थियों में औद्योगिक रचना त्मक, कृषि, सामाजिक क्षेत्रों में व्यावसाय के प्रति अधिक रूचि दिखाई देती है तो साहित्यिक, वैज्ञानिक, प्रशासनिक आदि क्षेत्रों में व्यवसाय के प्रति उनका रूझान कम है। मात्र अन्य विद्यार्थियों में साहित्य, विज्ञान, प्रशासनिक जैसे

व्यावसायिक क्षेत्रों में अधिक रूचि दिखाई देती है तो अन्य क्षेत्रों में उनकी रूचि कम प्रमाण में है।

स्वावलंबी शिक्षा योजना की बालिकाओं एवं अन्य बालिकाओं में सौंदर्यात्मक या कलात्मक, अनुनयात्मक, गृह विज्ञान, सामाजिक आदि क्षेत्रों में व्यवसाय के प्रति रूचि में समानता दिखाई देती है।

5.11 सुझाव

किसी भी देश की शिक्षा व्यवस्था उस राष्ट्र की प्रगति का सूचक होती है क्योंकि राष्ट्र के समग्र विकास का सर्वाधिक सशक्त माध्यम शिक्षा को ही माना जाता है। व्यक्ति व समाज का विकास जितना शिक्षा पर निर्भर करता है उतना किसी अन्य पर नहीं। स्वतंत्रता के इतने वर्षो बाद भी हम अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा के पूर्ण लक्ष्य को प्राप्त नहीं पाए है क्योंकि अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा होने के बावजूद परिणाम में शून्य होने के कारण निर्धन वर्ग अभी तक शिक्षा से नहीं जुड़ पाया है। देश को मजबूत और विकास के मार्ग में चलाना हो तो सर्व प्रथम शिक्षा का सार्वभौमिकरण करना होगा। इस दृष्टि से स्वावलंबी शिक्षा योजना एक पथ प्रदर्शक है। जहां विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास के साथ–साथ उनमें स्वावलंबन का भाव भी पैदा होता है। इस दृष्टि से निम्न सुझाव उपयोगी सिद्ध हो सकते है।

- जहां तक संभव है ज्यादा से ज्यादा शिक्षा संस्थाओं को स्वावलंबी शिक्षा योजना को स्वीकृत करना चाहिए तथा शासन ने भी उसमें योगदान देना चाहिए।
- स्वावलंबी शिक्षा योजना के विद्यार्थियों के लिए कल्याणकारी परियोजनाओं का उन्मुलन करना चाहिए।
- विद्यार्थियों को जीवकोपार्जन के लिए रोजगार उन्मुखीकरण प्रशिक्षण दिया जाए।
- विद्यार्थियों में स्वावलंबन का भाव उत्पन्न करना चहिए।
- शिक्षा के द्वारा स्वावलंबन के साथ–साथ चरित्र निर्माण को भी सर्व प्रमुख स्थान देना चाहिए।

➢ स्वावलंबी शिक्षा योजना के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ एवं शारीरिक स्वास्थ्य पर ध्यान देना चाहिए।

➢ स्वावलंबी शिक्षा योजना द्वारा बालक–बालिका को आदर्श नागरिक बनाने के साथ ही एक व्यावसायाभिमुख बनाने की योग्यता प्रदान करना चाहिए।

➢ विद्यार्थियों की रचनात्मक एवं कलात्मक प्रवृत्ति को महत्व दिया जाना चाहिए।

➢ विद्यार्थियों में मानसिक श्रम पर आधारित व्यवसाय के अभाव में तनावग्रस्त न होकर शारीरिक श्रमयुक्त किसी भी व्यवसाय को अपनाने की क्षमता का विकास करना चहिए।

D- 328

5.12 भावी शोध हेतु सुझाव

भविष्य में शोध हेतु कुछ प्रस्तावित समस्याएँ अध्ययन के लिए ली जा सकती है क्योंकि भारत में स्वावलंबी शिक्षा योजना को उचित स्थान नहीं मिल पाया है। फिर भी इस दिशा में शोंधकार्य के स्तर पर निम्न शीर्षकों के अंतर्गत विस्तृत अध्ययन किया जा सकता है।

➢ कर्मवीर भाऊभाव पाटील की स्वावलंबी शिक्षा योजना का आलोचनात्मक मूल्यांकन।

➢ स्वावलंबी शिक्षा योजना की वर्तमान प्रासंगिकता।

➢ स्वावलंबी शिक्षा योजना के विद्यार्थियों का व्यक्तिगत अध्ययन

➢ स्वावलंबी शिक्षा योजना के विद्यार्थी एवं अन्य विद्यार्थियों की कलात्मक एवं रचनात्मक कौशल का तुलनात्मक अध्ययन।

➢ स्वावलंबी शिक्षा योजना के विद्यार्थियों की श्रम तथा शिक्षा के प्रति अभिरुचिः एक अध्ययन।